श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान परिचय

मार्च - 2024

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर 10

शहर

विद्यार्थी का नाम

	प्रश्न-१ रिक्त स्थान		प्रश्न-२ एक ही शब्द में		
(१)	समाधि मरण	(१)	भावविशुद्धि	(५)	अध्ययन
(२)	वैराग्य	(२)	विदिशा	(६)	आदर
(३)	तपनीय	(३)	जैनशासन	(७)	प्रबल
(४)	बिना बताये	(४)	कामभोगाशंसा प्रयोग	(८)	बांधता है
(५)	अजीत शांति	(५)	सत्यज्ञान	(९)	उपधि
(६)	कृत्यो से	(६)	मनुष्यगति	(१०)	सुवर्णमय
(७)	अंतराय कर्म	(७)	सुवर्णमय	(११)	राजा
(८)	कंचनवर्णी	(८)	जिनेश्वर परमात्मा की पूजा	(१२)	उसे
(९)	परलोकाशंसा प्रयोग	(९)	समाधिमय	(१३)	दोसौयोजन ऊंचे
(१०)	जिनवचन	(१०)	तिर्यंचगति	(१४)	रौद्र
(११)	समयक्षेत्र	(११)	ममत्वभाव	(१५)	नाशकरना
(१२)	अणुव्रतो	(१२)	भरत महाराजा को	(१६)	सुनना/सुनो
(१३)	सचित्त विधान	(१३)	इंद्रभूति गौतम को	(१७)	पाते हैं
(१४)	मुक्तावस्था	(१४)	क्षेत्रसमास	(१८)	महा हिमवंत
(१५)	वेद त्रिक	(१५)	विपाक फल	(१९)	बिलके उपर
(१६)	चल, सूर्य, चंद्र			(२०)	गारव रहित
(१७)	सौधर्मेन्द्र				
(१८)	साधक आत्मा				
(१९)	निरहंकारी				
(२०)	प्राणिओ के समूह				

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	रचित
(२)	बेल (लता)
(३)	पूर्व दिशा
(४)	प्रमाद

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	5	(६)	3
(२)	7	(७)	2
(३)	9	(८)	4
(४)	8	(९)	1
(५)	10	(१०)	6

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	500 योजन
(२)	40
(३)	103
(४)	5
(५)	4
(६)	45 लाख
(७)	6
(८)	8
(९)	18
(१०)	45

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	✓	(१)	19
(२)	×	(२)	13
(३)	×	(३)	9
(४)	✓	(४)	2
(५)	×	(५)	7
(६)	✓	(६)	17
(७)	✓	(७)	5
(८)	×	(८)	15
(९)	×	(९)	10
(१०)	✓	(१०)	5

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ____________ जांचनेवाले की सही ____________

प्रश्न - ८

१. अतिथि संविभाग -> पाक्षिक आदि पर्वों के दिन उपवास सहित पौषध करके उसके पारणे दिन पूर्वोक्त न्यायोपार्जित द्रव्यसे बनाया हुआ शुद्धमान अन्नपान, उसमेसे विशेष भागका दान प्रथम साधुमुनिराजको देकर फिर बचे हुए आहार से खुद एकासणा करे ऐसा पौषध आदि पर्व के पारणे के दिन अवश्य करने का नियम करना उसे अतिथिसंविभागव्रत कहा जाता है। बारह महिने में कम से कम एक बार अतिथिसंविभागव्रत करने का नियम व्रतधारी श्रावक को करना चाहिए, ज्यादा बार कर सके इसका लक्ष्य रखना चाहिए। अतिचार न लगे एवं व्रत शुद्ध बने यह आत्मा निर्मलता का सूचक है। ऐसे व्रत आराधक बनने का पुरुषार्थ जरूर करे।

२. समय क्षेत्र — जिस क्षेत्र में समय, मुहूर्त अथवा सेकंड, मिनिट, घंटा, प्रहर, रात, महिना, साल आदि काल प्रवर्तमान है, उसे समयक्षेत्र कहते हैं। ढाई द्वीप का क्षेत्र समयक्षेत्र है। क्योंकि वहां चल सूर्य-चंद्र होनेसे उनकी गतिके कारण समय की गिनती होती है। समयक्षेत्र ढाई द्वीप प्रमाण अथवा 45 लाख योजन प्रमाण है, यह क्षेत्र मनुष्यक्षेत्र के नामसे पहचाना जाता है। इसी क्षेत्र में मनुष्य के जन्म-मरण होते हैं।

३. ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय कर्मबंध के विशेष हेतु -> ज्ञानावरणीय तथा दर्शनावरणीय कर्मबंध के 6 विशेष हेतु हैं 1) प्रत्यनीकत्व - उपरोक्त साधनों और व्यक्तिओं के प्रति अनिष्ट आचरण करनेसे कर्मबंध. 2) निह्नव - गुरु का नाम छुपानेसे, दूसरे को गुरु कहना, गुरुवचन से विपरीत प्ररूपणा करनेसे कर्मबंध (3) उपघात - देव-गुरु का घात करनेसे, मार मारनेसे, हत्या करनेसे (4) प्रद्वेष -> देवगुरु, ज्ञान-दर्शन के साधनों के उपर द्वेष धारण करनेसे, तिरस्कार - नफरत का भाव रखनेसे (5) अंतराय - ज्ञान-दर्शन की आराधना मे विघ्न, अंतराय करनेसे (6) आशातना — ज्ञान-दर्शन की आशातना, अवहेलना, निंदा करनेसे इन छह कारणोंसे जीव सविशेष ज्ञानावरणीय - दर्शनावरणीय कर्म तीव्ररस और दीर्घस्थितीवाला बांधता है।

४. निद्रा विधि -> परिवार के साथ बैठकर धर्मकथा, धर्मदेशना करनेके बाद याने एक प्रहर प्रमुख रात्री बीत जाने के बाद श्रावक विधिपूर्वक अल्प नींद ले। ~~पूर्वदिशामें मस्तक रखकर सोनेसे विद्या मिलती है~~ निद्राधीन होनेसे पहले श्रावक को सर्व जीवराशी को खमाना चाहिए, 18 पापस्थानक की आलोचना करनी चाहिए, दुष्कृत्य की निंदा, सुकृत की अनुमोदना करनी चाहिए। चार शरणोंका स्वीकार, सागारी अनशन का स्वीकार करना चाहिए। पूर्व या दक्षिण दिशामें मस्तक रखकर सोना चाहिए। सर्वथा उपशांत मोह होकर, धर्म वैराग्य भावनासे भावित होकर, वैराग्यवासित चेतना बनाकर निद्रा लेना चाहिए। विधिपूर्वक शयन करता है, वह सद्गति को प्राप्त करता है।

५. अग्निहोत्र के बारे में प्रभास की समझ -> प्रभास गणधर को लगता है जो अग्निहोत्र है वो यावज्जीव जरामर्य है याने यावज्जीवन अग्निहोत्र करना चाहिए, जो मानव जिंदगी के अंत तक अग्निहोत्र करता रहे उसे मोक्षफल देनेवाली क्रिया करनेका अवसर रहता नहीं है। अग्निहोत्र क्रियामें कितने जीवोंका वध होता है और कितनोंपर अमुक तरह का उपकार भी होता है, इसलिए स्वर्ग हो सकता है, पर मोक्ष तो सकता नहीं, ऐसी समझ प्रभास गणधर की थी।

जिनाज्ञा विरुद्ध कुछ लिखा गया हो तो
मिच्छामि दुक्कडम्